श्री गणेश कवचम्

अथ विनियोग: :-

ऊँ अस्य श्री गणेशकवचमहामन्त्रस्य कश्यप ऋषि:, श्रीमन्महागणाधिपतिदेवता, अनुष्टुप्छन्द:, गं बीजं, ह्रीं शक्ति:, क्लीं कीलकं, श्रीमन्महागणाधिपतिदेवताप्रीत्यर्थे गणेशकवच पाठे विनियोग:।

अथ ऋष्यादिन्यास: -

ऊँ श्रीकश्यपर्षये नम:- शिरसि। ऊँ श्रीमन्महागणाधिपतिदेवतायै नम:- हृदये। ऊँ श्र्यनुष्टुप्छन्दसे नम: - मुखे। ऊँ गं बीजाय नम: - गुह्ये। ऊँ ह्रीं शक्तये नम:- पादयो:। ऊँ क्लीं कीलकाय नम: - नाभौ। ऊँ श्रीमन्महागणाधिपतिदेवताप्रीत्यर्थे गणेशकवचपाठे विनियोगाय नम: - सर्वांगे।

	अथ करन्यास:	अथ अंगन्यास:
ऊँ गां नम:	अंगुष्ठाभ्यां नम:	हृदयाय नम:
ऊँ गीं नम:	तर्जनीभ्यां नम:	शिरसे स्वाहा
ऊँ गूं नम:	मध्यमाभ्यां नम:	शिखायै वषट्
ऊँ गैं नम:	अनामिकाभ्यां नम:	कवचाय हुम्
ऊँ गौं नम:	कनिष्ठिकाभ्यां नम:	नेत्रत्रयाय वौषट्
ऊँ ग: नम:	करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:	अस्त्राय फट्

ऊँ भूर्भुव:स्वरोमिति दिग्बन्द:।

अथ ध्यानम् :-

वन्दे सिंहगतं विनायकममुं दिग्बाहुमाद्ये युगे,
त्रेतायां तु मयूरवाहनममुं षड्बाहुकं सिद्धिदं।
द्वापरे तु गजाननं युगभुजं रक्तांगरागं विभुं,
तिष्ये तु द्विभुजं सितसंगरुचिरं सर्वार्थदं सर्वदा।।१।।

अथ कवचम् :-

विनायकश्शिखां पातु परमात्मा परात्पर:।
अतिसुन्दरकायस्तु मस्तकं सुमदोत्कट:।।१।।
ललाटं काश्यप: पातु भ्रूयुग्मं तु महोदर:।
नयने फालचन्द्रस्तु गजास्यश्चोष्ठपल्लवौ।।२।।
जिह्वां पातु गणक्रीडश्चिबुकं गिरिजासुत:।
वाचं विनायक: पातु दन्तान् रक्षतु दुर्मुख:।।३।।
श्रवणौ पाशपाणिस्तु नासिकां चिन्तितार्थद:।
गणेशस्तु मुखं कण्ठं पातु देवो गणंजय:।।४।।
स्कन्धौ पातु गजस्कन्ध: स्तनौ विघ्नविनाशन:।
हृदयं गणनाथस्तु हेरम्बो जठरं महान्।।५।।
धराधर: पातु पार्श्वं पृष्ठं विघ्नहरश्शुभ:।
लिंगं गुह्यं सदा पातु वक्रतुण्डो महाबल:।।६।।
गणक्रीडो जानुजंघे ऊरू मंगलमूर्तिमान्।
एकदन्तो महाबुद्धि: पादौ गुल्फौ सदाऽवतु।।७।।
क्षिप्रप्रसादनो बाहू पाणी आशाप्रपूरक:।
अंगुळीश्च नखान्पादं हस्तौ पात्वरिनाशन:।।८।।
सर्वांगानि मयूरेशो विश्वव्यापी सदाऽवतु।
अनुक्तमपि यत्स्थानं धूमकेतुस्सदाऽवतु।।९।।
आमोदस्त्वग्रत: पातु प्रमोद: पृष्ठतोऽवतु।
प्राच्यां रक्षतु बुद्धीश आग्नेय्यां सिद्धिदायक:।।१०।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

दक्षिणस्यामुमापुत्रः नैर्ऋत्यां तु गणेश्वरः।
प्रतीच्यां विघ्नकर्ताऽव्यात् वायव्यां गजकर्णकः।।११।।
कौबेर्यां निधिपः पायादीशान्यामीशनन्दनः।
दिवाऽव्यादेकदन्तस्तु रात्रौ सन्ध्यासु विघ्नहृत्।।१२।।
राक्षसासुर - वेताळ - ग्रह - भूतपिशाचतः।
पाशाङ्कुशधरः पातु रजस्सत्त्वं तमस्स्मृतिम्।।१३।।
ज्ञानं धर्मंच लक्ष्मींच लज्जां कीर्तिं दयां कुलं।
वपुर्धनं च धान्यं गृहान्दारान्सखीन्सुतान्।।१४।।
सर्वायुधधरः पौत्रान् मयूरेशोऽवतात्सदा।
कपिलोऽजाविकं पातु गवाश्वं विकटोऽवतु।।१५।।
त्रिसन्ध्यं जपते यस्तु वज्रसारतनुर्भवेत्।
यात्राकाले पठेद्यस्तु निर्विघ्नेन फलं लभेत्।।१६।।
एकविंशतिवारं च पठेत्तावद्दिनानि च।
कारागृहगतं सद्यो राज्ञा बद्धं च मोचयेत्।।१७।।
राजदर्शनवेळायां पठेद्यस्तु त्रिवारतः।
स राजानं वशं नीत्वा प्रकृतीश्च सभां जयेत्।।१८।।
इदं गणेशकवचं कश्यपेन समीरितम्।
सर्वरक्षाकरं सर्वसर्वकामप्रपूरकम्।।१९।।
इति श्रीमन्महागणाधिपतिदेवताप्रीत्यर्थं समर्पणमस्तु।।
।। हरि ॐ तत्सत्।। ब्रह्मार्पणमस्तु।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM